



न्यायालय

सहायक कलक्टर / उपखण्ड अधिकारी

गुडामालानी

(पीठासीन अधिकारी - केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

प्रार्थना पत्र सं.: -2025 / 744

दर्ज तिथि: -28.10.2025

1. जवाहरनाथ पुत्र मिसरनाथ
2. जोगनाथ पुत्र मिसरनाथ
3. तुलछनाथ पुत्र मिसरनाथ
4. देवनाथ पुत्र मिसरनाथ
5. सुजनाथ पुत्र मिसरनाथ
6. रमेशनाथ पुत्र मिसरनाथ
7. मोहनीदेवी पत्नी मिसरनाथ
8. केवलनाथ पुत्र भेरनाथ
9. हडमाननाथ पुत्र भेरनाथ
10. खूमनाथ पुत्र भेरनाथ

जाति गोस्वामी निवासी नई उन्दरी तहसील गुडामालानी

बनाम

1. गुणेशा पुत्र उकाराम
2. जगमाल पुत्र उकाराम
3. भीमा पुत्र उकाराम
4. मोहन पुत्र उकाराम
5. छगनाराम पुत्र आईदानराम
6. रामाराम पुत्र आईदानराम
7. मोहनीदेवी पत्नी आईदानराम
8. देराजराम पुत्र लिछमणा

जाति कुम्हार निवासी नई उन्दरी तहसील गुडामालानी

9. राजस्थान राज्य जरिये तहसीलदार गुडामालानी

.....प्रार्थीगण

..... अप्रार्थीगण

..... तकमिली अप्रार्थीगण

उपस्थित अधिवक्ता

प्रार्थी:-श्री जगदीश कडवासरा

अप्रार्थीगण:-श्री नारायण कुमावत



-:निर्णय:-

निर्णय तिथि:-23.02.2026

1. आज यह पत्रावली प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा-128 राजस्थान भू-राजस्व अधि-1956 वास्ते निर्णय हेतु पेश हुई। प्रकरण का सुक्ष्म वृत्तान्त इस प्रकार से है कि प्रार्थीगण द्वारा प्रार्थना पत्र पेश कर निवेदन किया कि प्रार्थीगण की हाल आराजी खसरा संख्या 59/1/2.5900 है0 मौजा नई उन्दरी पटवार हल्का खुडाला तहसील गुड़ामालानी में स्थित है। उक्त वर्णित आराजी प्रार्थीगण की कब्जेकाश्त खातेदारी की आराजी है एवं आराजी पर प्रार्थीगण काबिज रहकर बिना किसी बाधा वो रूकावट के काश्त करते चले आ रहे है। उक्त खातेदारी आराजी से अप्रार्थीगण का कोई हक संबंध किसी प्रकार का नहीं है। अप्रार्थीगण प्रार्थीगण की आराजी के कार्यकाश्त में बाधा डालते हैं। उक्त आराजी का मौके पर सीमांकन नहीं होने से प्रार्थीगण द्वारा सीमांकन कराए जाने बाबत तहसीलदार गुड़ामालानी के यहां प्रार्थना-पत्र पेश किया। जिस पर तहसीलदार गुड़ामालानी के आदेश दिनांक 21.05.2025 की पालना में दिनांक 23.05.2025 को पटवारी हल्का द्वारा उक्त आराजी का सीमांकन करवाया गया। परन्तु अप्रार्थीगण मौके पर असंतुष्ट होकर पैमाइश को नहीं मान रहे है तथा प्रार्थीगण की आराजी को अपनी आराजी में मिलाना चाहते है। अब प्रार्थीगण अपनी खातेदारी आराजी की पत्थरगढ़ी दिनांक 23.05.2025 की सीमाज्ञान रिपोर्ट के अनुसार कराना चाहते है। अंत में प्रार्थना-पत्र प्रार्थीगण स्वीकार कर आराजी उक्त की पत्थरगढ़ी मुताबिक पैमाइश के अनुसार कराए जाने के आदेश जारी करने का निवेदन किया गया।
2. प्रार्थीगण का प्रार्थना पत्र दर्ज रजिस्टर किया गया एवं अप्रार्थीगण को जरिये नोटिस तलब किया गया। अप्रार्थीगण संख्या 1 ता 5 व 8 असालतन-वकालतन हाजिर न्यायालय हुए। शेष अप्रार्थीगण के बावजूद विधिवत तामील अनुपस्थित होने के कारण शेष अप्रार्थीगण के विरुद्ध एकतरफा कार्यवाही अमल में लाई गयी। प्रकरण में अधिवक्ता अप्रार्थीगण द्वारा जवाब प्रस्तुत कर निवेदन किया कि प्रार्थीगण द्वारा उक्त आराजी जरिये पंजीबद्ध रजिस्ट्री क्रय की है। जिसका मूल खसरा संख्या 59 था। जिसमें विप्रार्थीगण की रहवासी ढाणिया बनी हुई है। अप्रार्थी के बेचान दस्तावेज का नामान्तरकण करते वक्त राजस्व कार्मिकों द्वारा मौका के अनुसार तरमीम नहीं की गई जिससे प्रार्थीगण की आराजी में विप्रार्थीगण का कब्जा एवं रहवासी ढाणिया इत्यादि बनी हुई है। प्रार्थीगण अपने खसरा की तरमीम शुद्ध नहीं करवाकर नेखमबंदी से अप्रार्थीगण को बेदखल करने से नेखमबंदी की कार्यवाही पोषणीय नहीं होने से प्रार्थीगण का प्रार्थना पत्र खारिज योग्य है। साथ ही अप्रार्थीगण की आराजी के खेतों के

मध्य करीब 50-60 वर्षों से पुरानी माट बनी हुई जिसमें बड़े-बड़े पेड़ हैं। दोनों पक्षों के मध्य किसी प्रकार का विवाद नहीं है।

3. न्यायालय द्वारा विद्वान अधिवक्ता उभयपक्षकारान की बहस सुनी गई। दौराने बहस प्रार्थी अधिवक्ता द्वारा प्रार्थना-पत्र में अंकित तथ्यों को दोहराते हुए प्रार्थना-पत्र प्रार्थीगण स्वीकार कर आराजी की मुताबिक पैमाइश दिनांक 23.05.2025 के अनुसार पत्थरगढी के आदेश जारी करने का निवेदन किया है। प्रार्थीगण द्वारा अभिकथन किया गया कि नेखमबंदी के दौरान यदि विप्रार्थीगण की ढाणियां प्रार्थी की आराजी में आती है तो प्रार्थीगण उक्त विप्रार्थीगण की ढाणिया के उपयोग की भूमि छोड़ देगे एवं उक्त भूमि के बदले में विप्रार्थीगण सेढा-सेढ भूमि प्रार्थी को अंतरण हेतु उपलब्ध करवायेंगे। जिस पर विप्रार्थीगण अधिवक्ता ने दौराने बहस सहमति प्रदान की।
4. मैंने बहस प्रार्थी अधिवक्ता पर मनन किया। प्रकरण में सर्वप्रथम राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम-1956 की धारा-111 का उद्धरण यहां प्रासंगिक है। जो कि इस प्रकार है:-

111. Decision of disputes as to boundaries.—(1) *In case of any dispute concerning any boundaries the Land Records Officer shall decide such dispute, so far as possible, on the basis of the existing survey maps and, where this is not possible or such maps are not available, on the basis of actual possession.*

(2) *If, in the course of an inquiry into a dispute under this section the Land Records Officer is unable to satisfy himself as to which party is in the possession or it is shown that possession has been obtained by wrongful dispossession of the lawful occupants within a period of three months previous to the commencement of the inquiry, the Land Records Officer shall ascertain by summary inquiry who is the party best entitled to possession and shall then fix the boundary accordingly.*

5. राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम-1956 की धारा-111 के अनुसार खसरों की सीमाओं के विवाद को हाल राजस्व नक्शे के अनुसार तथा हाल राजस्व नक्शे के उपलब्ध न होने पर वास्तविक कब्जे के आधार पर निस्तारित किये जाने के प्रावधान बनाये गये हैं। खसरों की सीमाओं के विवाद को निस्तारित करने की प्रक्रिया के सम्बन्ध में राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम-1956 की धारा-128 के तहत प्रावधान बनाये गये हैं। अतः प्रकरण में साथ ही राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम-1956 की धारा-128 का उद्धरण यहां प्रासंगिक है। जो कि इस प्रकार है:-

128. Boundary disputes. - *All disputes concerning boundaries shall be decided by the Land Record Officer in the manner laid down in section 111:*

Provided that applications in relation to boundaries of fields may be made to and disposed of by the Tehsildar in cases where there exists no

dispute as to such boundaries but on account of the absence of proper boundary marks there is the likelihood of such a dispute arising.

6. उक्त विधिक प्रावधानों के संदर्भ में पत्रावली पर संलग्न दस्तावेजात् जमाबंदी सम्बन्त 2074-2077 ग्राम जूनी उन्दरी में राजस्व इन्द्राज एवं तहसीलदार गुड़ामालानी द्वारा किये गये सीमांकन रिपोर्ट का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया। बाद अवलोकन पाया गया कि पत्रावली पर उपलब्ध राजस्व रिकॉर्ड के अंकित इन्द्राज के अनुसार उक्त आराजी प्रार्थीगण की सालिम खातेदारी की आराजी होना साबित है। साथ ही संलग्न रिपोर्ट पैमाइश दिनांक दिनांक 23.05.2025 से भी यह तथ्य प्रार्थीगण साबित है कि प्रार्थीगण द्वारा तहसीलदार गुड़ामालानी के माध्यम से हल्का पटवारी से युक्त वर्णित आराजी की पैमाइश कराई जा चुकी है। सीमाज्ञान रिपोर्ट में पटवारी हल्का द्वारा मौके पर मुस्तकिल बिन्दु मानकर सीमाज्ञान किया। मौके पर प्रार्थीगण को सीमाचिह्न बताकर प्रार्थीगण को संतुष्ट किया गया है। तहसीलदार रिपोर्ट के अनुसार उक्त वर्णित आराजी की खसरे की सीमाओं को लेकर अप्रार्थीगण के साथ सीमा विवाद है। इस प्रकार प्रार्थीगण की अपनी कब्जेशुदा खातेदारी आराजी की सुरक्षा तथा सीमा विवाद के निस्तारण हेतु पत्थरगढ़ी के प्रार्थना पत्र को स्वीकार किया जाकर आदेश जारी किया जाना उचित प्रतीत होता है। अतः

आदेश है कि

प्रार्थना-पत्र प्रार्थीगण अंतर्गत धारा-128 भू-राजस्व अधिनियम-1956 के बाबत पत्थरगढ़ी किये जाने का स्वीकार किया जाता है। हाल आराजी खसरा संख्या 59/1/2.5900 है0 मौजा जूनी उन्दरी पटवार हल्का खुडाला तहसील गुड़ामालानी पर प्रार्थीगण एवं संबंधित पक्षकारों/हितधारकों की पूर्व सूचित उपस्थिति में खातेदारी आराजी पर उभय पक्षकारों के मध्य सहमति के आधार पर सीमा निर्धारण किये जाने के आदेश तहसीलदार गुड़ामालानी को दिये जाते हैं एवं साथ ही निर्देश दिये जाते हैं कि अप्रार्थीगण को मौके पर उपस्थित रहने बाबत जरिये नोटिस पूर्वसूचित करते हुए पत्थरगढ़ी की जाकर पालना रिपोर्ट न्यायालय को अवगत करायें। पक्षकार अपना-अपना खर्चा स्वयं वहन करेंगे।

आदेश प्रति पालनार्थ हेतु तहसीलदार गुड़ामालानी को भिजवाई जावे। अहकाम पृथक से जारी किया जावे।

यह आदेश मेरे द्वारा आज दिनांक 23.02.2026 को लिखवाया जाकर सरे-इजलास सुनाया जाकर हस्ताक्षर व मोहर युक्त जारी किया गया।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)
उपखण्ड अधिकारी
गुढामालानी

